जयप्रकाश नारायण समाजवादी चिंतक के रूप में

महात्मा गांधी ने जयप्रकाश नारायण को भारत का सर्वोत्तम समाजवादी चिंतक स्वीकार किया था। इस स्वीकारोक्ति के पीछे सामीप्य की भावना नहीं अपितु दर्शन की भावना का स्वागत हुआ। जयप्रकाश ने वस्तुतः समाजवाद को सही अर्थों में ग्रहा है। प्रथम असहयोग आंदोलन1920 के बाद अमेरिका के प्रवास में एमएन राय की प्रेरणा से जयप्रकाश की साम्यवाद की ओर बढ़े। असहयोग आंदोलन ने स्वतंत्रता की ज्योति जलाई। मार्क्सवाद ने क्षमता और बंधुत्व की भावना पैदा की उनके अपने ही शब्दों में क्रांति का समाजवादी सिद्धांत गांधीजी की सविनय अवज्ञा और असहयोग पद्धति की अपेक्षा अधिक निश्चित और शीघ्रगामी मालूम हुआ। महान नेता लेलिन की रोमांचकारी सफलता ने जिस के विवरण पढ़कर हम सभी अघाते ही नहीं थे, लगता था क्रांति के लिए मार्क्सवादी रास्ते की श्रेष्ठा को इससे सिद्ध कर दिया। उसी समय मार्क्सवाद ने क्षमता और बंधुत्व की एक और ज्योति मेरे लिए जगा दी। केवल स्वतंत्रता प्राप्त नहीं थी, इसका अर्थ होना चाहिए सब की जो निम्नतम स्तर पर है उनकी भी स्वतंत्रता। इस स्वतंत्रता में शोषण से, भुखमरी से और दरिद्रता से मुक्ति भी शामिल होनी चाहिए।

स्वतंत्रता के साथ-साथ समता और बंधुत्व की भूख ने उन्हें संवाद के निकट तो पहुंचा दिया किंतु जब वह अमेरिका से वापस भारत आए तब यहां सविनय अवज्ञा आंदोलन में उन्होंने पुनः हिस्सा लिया।साम्यवादियो ने इस आंदोलन को इस ढंग से तिरस्कृत किया कि बाबू जयप्रकाश जी का मन साम्यवाद से हटकर समाजवादी के सही केंद्र पर पहुंच गया।

जयप्रकाश यह पूरी तरह से स्वीकार कर चुके थे कि भारत को विभिन्न समस्याओं का विकल्प समाजवाद में निहित है। समाजवाद को लाने के लिए एक गतिशील संगठन की आवश्यकता अनुभव होती है। सिंध में आयोजित कांग्रेस समाजवादी दल के सम्मुख भाषण करते हुए उन्होंने कहा था भारत एक विशाल

देश है। इसकी विभिन्न समस्याओं का समाधान समाजवाद के पास है। समाजवाद की सभी शक्तियों को एक होकर इस की स्वतंत्रता के संघर्ष में योगदान देना चाहिए। क्षमता और बंधुत्व के लिए कार्य करना चाहिए भारत की आर्थिक और सामाजिक समस्याओं का निदान समाजवाद में प्रस्तुत है।

स्वतंत्रता और समानता-वह समानता के प्रयोग को जीवन के विविध पक्षों में स्थापित करने का समर्थन करते हैं। वह आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में समानता के लिए विशेष शुरू से जागरूक रहें हिंदुस्तान में भी गरीबी है एक तरफ भुखमरी और दूसरी और दौलत और मौज है। हिंदुस्तान में भी शोषण है यहां भी उत्पादन के सभी साधन कुछ व्यक्तियों के हाथ में है।

नागरिक स्वतंत्रता के बिना किसी व्यक्ति को अपने विकास का समुचित अ।वसर नहीं मिल सकता। जयप्रकाश का समाजवादी चिंतन नागरिक स्वतंत्रता के लिए भी प्रयत्न करता है और उसकी व्यवस्था के लिए संघर्ष भी । 21 सितंबर सन 1945 को बंगाल समाजवादी पार्टी कॉन्फ्रेंस में भाषण करते हुए उन्होंने कहा था या जाति बंगाल निरंकुश शासन की बुराइयों से पीड़ित है किंतु केवल बंगाल पर ही है कष्ट नहीं है। एक तरह से सारा देश में फंसा है और शांति काल में भी याद आती और गैर कानूनी उत्पीड़न की कार्रवाई या असाधारण नहीं है। यदि जनता जागरूक होती और उनमें किसी प्रकार का संगठन होता तो इनमें से बहुत सी कार्रवाईया न हो पाती । इन संगठनों का वह कर्तव्य होता है कि वे ऐसी कार्रवाइयों का भंडाफोड़ करते और अदालतों, धारा सभाओ, पत्रों और भाषणों द्वारा उनका विरोध करते। इसलिए जयप्रकाश नारायण ने कहा कि मेरा सुझाव है कि एक गैर सरकारी संस्था बनाई जाए जिस का यह कर्तव्य है कि वह नागरिकता के साधारण अधिकारों व समाज के प्रत्येक सदस्य के हो-----करें। जयप्रकाश जी मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास के लिए क्षमता और स्वतंत्रता के अधिकार की मांग करते हैं। वह राष्ट्रीय संदर्भ में भी इस मांग को रखते हैं देश की स्वतंत्रता के लिए उन्होंने बहुत लंबे

समय तक संघर्ष किया। गांधी का प्रथम सत्याग्रह आंदोलन एक चढ़ते हुए तूफान की तरह देश में छा गया। उस जमाने के हजारों नौजवान में से मैं भी एक था जो सूखी पत्तियों की तरह उस तूफान में उड़कर कुछ देर के लिए आकाश में पहुंच गए थे । यही वह समय था जब स्वतंत्रता मेरे जीवन का आकाशदीप बनी जो आज तक वैसे ही बनी हुई है।

उत्पादन के साधनों का समाजीकरण- कोई भी राष्ट्र तब तक प्रगति नहीं कर सकता जब तक उसकी उत्पादन क्षमता पर कुछ लोगों के स्थान पर राष्ट्र का अधिकार ना हो। समाजवादी जयप्रकाश का यह निश्चित मत रहा है। "आर्थिक शोषण की प्रवृत्ति को रोकने के लिए उत्पादन के साधनों का समाजीकरण होना चाहिए व्यक्तिगत हितों के लिए प्रयोग किए जाने वाले साधनों से सामाजिक जीवन में विषमता के भाव पैदा होते हैं।" मनुष्य प्राकृतिक और समानताओं को छोड़कर जब कृत्रिम और समानताओं का शिकार होता है, तब जयप्रकाश का समाजवादी मन विद्रोह करता है और तब वह केवल अहिंसा और हिंसा के भेद करने की प्रवृत्ति का अध्ययन नहीं करते बल्कि उद्देश्य प्राप्ति की तरफ बढ़ते हैं। वह गांधी जी के आंदोलन में जेल गए किंतु देश कि मुक्ति के लिए अहिंसा की शक्ति को प्राप्त मानते थे। सन् 1940 में जेल से भाग जाने का उद्देश्य केवल क्रांतिकारी गुप्त संगठनों को शक्तिशाली बनाना था। वह अपने साधनों के संबंध में सही निर्णय न कर पाने के कारण कुछ समय के लिए बहके लेकिन अंततः उन्हें साधनों की पवित्रता का आग्रह स्वीकार करना पड़ा।